Carpenter's monthly newspaper

www.carpentersnews.com

कारपेंटर्स न्यूज़

R.N.I.No.MAHHIN/2005/16460 | Postel Regd. No. MCW/321/2025-27
Posted at Delisle Road, Mumbai-400013. On 20th of Every month | Published on Every 10 th day of the month

मासिक समाचार पत्र

मुंबई | सितंबर 2026 | वर्ष : 21 | अंक : 10 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 2 रुपए

कारपेंटर समाज ने दिखाई एकजुटता की ताकत .... पेज - 2

कारपेंटर समाज ने दिखाई एकजुटता की ताकत, रामचरण जांगिड़ निर्विरोध अध्यक्ष

जयपुर @ कारपेंटर्स न्यूज । राजस्थान के कारपेंटर समाज ने एकजुटता, सामाजिक भाईचारे और संगठन की मजबूती का संदेश देते हुए 15 अगस्त को आयोजित आम सभा व स्नेह मिलन समारोह में समाज के विकास की नई दिशा का संकल्प लिया। जेएलएन मार्ग स्थित अणुविभा केंद्र के महाप्रज्ञ सभागार में कारपेंटर एसोसिएशन विकास समिति की ओर से आयोजित कारपेंटर महासम्मेलन में जयपुर, सीकर, चूरू, कोटा, करौली, गंगापुर, दौसा, जोधपुर, डूंगरपुर सहित राजस्थान के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में फर्नीचर ठेकेदार, कारीगर, पदाधिकारी और समाज बंधु शामिल हुए। इसी दौरान रामचरण जांगिड़ को सर्वसम्मति से निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। आम सभा की अध्यक्षता एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष रामअवतार पिलवाल ने की। चुनाव अधिकारी एडवोकेट मोहम्मद रियाज की मौजूदगी में अध्यक्ष पद की चुनाव प्रक्रिया शुरू हुई। उपस्थित समाज बंधुओं ने रामचरण जांगिड़ के नाम का समर्थन करते हुए उनके पूर्व योगदान की सराहना की। अध्यक्ष पद के लिए एक ही नाम सामने आने पर चुनाव अधिकारी ने उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष का समाज बंधुओं ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ स्वागत किया।

समाज के हुनर को सम्मान, युवाओं को रोजगार का संकल्प

आम सभा में समाज के विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर गंभीरता से मंथन हुआ। युवाओं के कौशल विकास, आधुनिक प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर बढ़ाने, कारीगरों को नई तकनीक से जोड़ने और सामाजिक एकता को मजबूत करने जैसे विषय प्रमुख रहे।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष रामचरण जांगिड़ ने कहा कि कारपेंटर समाज के हुनरमंद कारीगर देश के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जरूरत है कि उनके पारंपरिक हुनर को आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षण से जोड़ा जाए, ताकि उन्हें सम्मान के साथ रोजगार और आगे बढ़ने के बेहतर अवसर मिल सकें। उन्होंने समाजहित में संगठन को और मजबूत बनाने का संकल्प व्यक्त किया।

एक शाम कारपेंटर के नाम ने बांधा समां

आम सभा के बाद आयोजित एक शाम कारपेंटर के नाम भव्य सांस्कृतिक संध्या समारोह का प्रमुख आकर्षण रही। कलाकारों की गीत-संगीत एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने देर तक दर्शकों को बांधे रखा। कार्यक्रम स्थल पर उत्साह और उमंग का माहौल रहा तथा समाज बंधुओं ने कलाकारों की प्रस्तुतियों का तालियों के साथ स्वागत किया।

एक पंगत में बैठे समाज बंधु, दिया एकता का संदेश

समारोह में आयोजित सामूहिक गोठ एवं स्नेह मिलन ने सामाजिक एकता की मजबूत तस्वीर पेश की। विभिन्न जिलों से आए समाज बंधुओं ने एक साथ बैठकर भोजन किया और आपसी भाईचारे का संदेश दिया। समाज बंधुओं ने कहा कि ऐसे आयोजन केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज को जोड़ने और नई पीढ़ी को संगठन की ताकत से परिचित कराने का माध्यम भी बनते हैं।

वरिष्ठ प्रतिभाओं का सम्मान, युवाओं को मिली प्रेरणा

समारोह में समाज की वरिष्ठ एवं प्रतिभाशाली हस्तियों के योगदान को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नई पीढ़ी को वरिष्ठजनों के अनुभव और उपलब्धियों से प्रेरणा लेने का संदेश दिया गया। आयोजकों ने कहा कि समाज के बुजुर्गों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा मिलकर समाज को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती है।

समाज हित के आयोजन निरंतर जारी रखने का संकल्प

समिति सचिव चेतराम जांगिड़ व कोषाध्यक्ष प्रहलाद जांगिड़ सहित समिति के सभी पदाधिकारियों ने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया। समिति पदाधिकारियों ने कहा कि भविष्य में भी कारपेंटर समाज के हित में सामाजिक, सांस्कृतिक, कौशल विकास और प्रशिक्षण से जुड़े कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाएंगे। महासम्मेलन ने राजस्थान के कारपेंटर समाज के बीच एकता, सम्मान, कौशल, स्वावलंबन और विकास की नई उम्मीद जगाई। प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए फर्नीचर ठेकेदारों और कारीगरों की सहभागिता ने संगठन की व्यापकता और समाज की एकजुटता को भी रेखांकित किया।

कारपेंटर्स न्यूज़

RNI NO. MAHHIN/2005/16460

कारपेंटर्स न्यूज में विज्ञापन या प्रतियों के लिए 9320566633 पर संपर्क करें।
Email: carpentersnews@gmail.com

सभी सम्मानित पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को श्री विश्वकर्मा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। भगवान विश्वकर्मा की कृपा से सृजन और निर्माण की शक्ति निरंतर प्रबल हो, कर्म को नई दिशा मिले तथा हर जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता का उजास फैले।

- संपादक

मुंबई	सितंबर 2026	वर्ष : 21	अंक : 10	पृष्ठ : 16	मूल्य : 2 रुपए

NWAY
The Smart Way

EVERY DOOR DESERVES A
dorsët
MORE SAFE. MORE SECURE.
dorsët MITRON
Saath Umar Bhar Ka!

स्मार्ट कारपेंटर की स्मार्ट पसंद !

Magic Corner
हर कोने को देता है नई पहचान।

स्मार्ट डिज़ाइन
आसान एक्सेस
बेहतरीन स्पेस मैनेजमेंट

काम भी आसान, किचन भी शानदार।

आज ही रजिस्टर करें और पहले स्कैन के साथ
250
बोनस अंक सुनिश्चित करें

PAN/AADHAR से लॉयल्टी प्रोग्राम जॉइन करें।

डोरसेट मित्रों ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें
पुरस्कार जीतने हेतु मित्रों वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

हमें फॉलो करें:
Dorset India
MITRON HELPDESK SUPPORT
1800 2022 434
mitronsupport@dorsetindia.com

श्री विश्वकर्मा महापूजा : सृजन, कौशल और कर्मयोग का महापर्व

मानव सभ्यता की विकास यात्रा को यदि ध्यान से देखा जाए तो इसकी कहानी केवल राजाओं, युद्धों और साम्राज्यों की कहानी नहीं है। यह उन अनगिनत हाथों की कहानी भी है, जिन्होंने पत्थर को तराशकर आकार दिया, लकड़ी को उपयोगी वस्तु में बदला, लोहे को ढालकर औजार बनाए, घर और मंदिर खड़े किए और समय के साथ नई तकनीकों को जन्म दिया। सभ्यता के निर्माण में इन कुशल हाथों की भूमिका जितनी महत्वपूर्ण रही है, उतना ही महत्वपूर्ण रहा है श्रम, कौशल और सृजन के प्रति सम्मान। भारतीय परंपरा ने इसी सृजनात्मक शक्ति को भगवान विश्वकर्मा के रूप में प्रतिष्ठित किया। भगवान विश्वकर्मा को देव शिल्पी के रूप में स्मरण किया जाता है। धार्मिक परंपराओं में उन्हें दिव्य निर्माण कला, वास्तु, शिल्प और तकनीकी दक्षता का प्रतीक माना गया है। इसलिए श्री विश्वकर्मा महापूजा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि कर्म, कौशल, तकनीक और सृजनशीलता के सम्मान का पर्व भी है।

विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर जब किसी कार्यशाला में बढ़ई अपने औजारों को साफ कर उन्हें पूजा स्थल पर रखता है, लोहार अपनी मशीनों और उपकरणों का पूजन करता है, इंजीनियर अपने कार्यस्थल पर भगवान विश्वकर्मा को नमन करता है या किसी कारखाने में मशीनों की पूजा होती है, तो इसके पीछे एक गहरा भाव छिपा होता है, जिस साधन से हमारी आजीविका चलती है, उसका सम्मान किया जाए और उसका उपयोग जिम्मेदारी तथा कुशलता के साथ किया जाए।

भगवान विश्वकर्मा : सृजन और निर्माण के प्रतीक

भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में भगवान विश्वकर्मा का उल्लेख देव शिल्पी के रूप में मिलता है। विभिन्न पौराणिक कथाओं और लोक परंपराओं में उन्हें देवताओं के लिए भवनों, अस्त्र-शस्त्रों और दिव्य संरचनाओं का निर्माण करने वाला शिल्पी बताया गया है। इसी कारण विश्वकर्मा केवल किसी एक पेशे या समुदाय के आराध्य नहीं हैं। उनका प्रतीकात्मक स्वरूप निर्माण और सृजन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर समेटता है। एक बढ़ई जब लकड़ी को आकार देता है, एक लोहार धातु को उपयोगी रूप देता है, एक राजमिस्त्री भवन का निर्माण करता है, एक इंजीनियर मशीन की डिजाइन तैयार करता है और एक तकनीशियन किसी जटिल उपकरण को ठीक करता है, इन सभी कार्यों में सृजन और कौशल की भावना दिखाई देती है। विश्वकर्मा पूजा इस व्यापक श्रम संस्कृति को सम्मान देने का अवसर बनती है।

औजार केवल साधन नहीं, कारीगर की पहचान हैं

कारीगर के लिए उसका औजार केवल लोहे, लकड़ी या मशीन का एक टुकड़ा नहीं होता। वह उसके हुनर का साथी होता है। बढ़ई की आरी, रंदा, हथौड़ा और छेनी, लोहार की भट्ठी और हथौड़ी, मैकेनिक के उपकरण, इलेक्ट्रीशियन के औजार, आधुनिक तकनीशियन की मशीनें इन सबका सीधा संबंध उसके काम और उसकी रोजी रोटी से है। विश्वकर्मा महापूजा पर इन औजारों की सफाई और पूजा की परंपरा इसलिए विशेष अर्थ रखती है। यह परंपरा कारीगर को यह अहसास कराती है कि उसके श्रम का सम्मान है।

आज के आधुनिक दौर में भी यह भावना बदली नहीं है। अंतर केवल इतना है कि पारंपरिक औजारों के साथ अब कंप्यूटर, डिजाइन सॉफ्टवेयर, अत्याधुनिक मशीनों, रोबोटिक उपकरण और डिजिटल तकनीक भी कार्यस्थलों का हिस्सा बन चुके हैं। इसलिए विश्वकर्मा पूजा का अर्थ भी व्यापक हो गया है। आज यह हाथ के हुनर से लेकर तकनीकी ज्ञान तक, हर प्रकार के कौशल को सम्मान देने का अवसर है।

श्रम की गरिमा का संदेश

भारतीय समाज में लंबे समय तक हाथ से काम करने वाले कारीगरों और श्रमिकों ने समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। घर बनाने से लेकर फर्नीचर तैयार करने, कृषि उपकरण बनाने, कपड़े बुनने, धातु का काम करने और विभिन्न उपयोगी वस्तुओं के निर्माण तक, कारीगरों की भूमिका जीवन के लगभग हर क्षेत्र में रही है। फिर भी कई बार श्रम करने वाले हाथों को वह सामाजिक सम्मान नहीं मिला जिसके वे अधिकारी थे। विश्वकर्मा पूजा इस सोच को बदलने का संदेश देती है। यह बताती है कि काम छोटा या बड़ा नहीं होता, काम को करने का कौशल और ईमानदारी उसे महत्वपूर्ण बनाती है। एक सुंदर मेज बनाने वाला बढ़ई, एक मजबूत मशीन तैयार करने वाला तकनीशियन और एक विशाल इमारत की नींव रखने वाला श्रमिक सभी विकास की एक ही श्रृंखला के हिस्से हैं। इस दृष्टि से विश्वकर्मा पूजा को श्रम की गरिमा का पर्व भी कहा जा सकता है।

परंपरा से आधुनिक तकनीक तक

समय के साथ दुनिया बदल रही है। मशीनों ने अनेक पारंपरिक कार्यों को आसान बनाया है। कंप्यूटर डिजाइन ने नक्शे और डिजाइन तैयार करने के तरीके बदल दिए हैं। सीएनसी मशीनों, लेजर कटिंग, थ्री-डी प्रिंटिंग, ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों ने निर्माण और उत्पादन की दुनिया को नई दिशा दी है। लेकिन तकनीक चाहे कितनी भी विकसित क्यों न हो जाए, उसके पीछे मनुष्य का ज्ञान और कौशल आवश्यक रहता है। एक आधुनिक मशीन स्वयं निर्णय नहीं लेती कि उसका उपयोग किस उद्देश्य से और किस गुणवत्ता के साथ किया जाए। उसके संचालन, डिजाइन, रखरखाव और विकास के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि विश्वकर्मा पूजा का संदेश आज भी प्रासंगिक है। यह हमें बताती है कि तकनीक के साथ कौशल और जिम्मेदारी का विकास भी जरूरी है।

कारीगरों के लिए बदलती दुनिया की नई चुनौतियां

आज कारीगर समुदाय के सामने अवसर भी हैं और चुनौतियां भी। बाजार बदल रहा है, ग्राहकों की पसंद बदल रही है और उत्पादन की तकनीक तेजी से बदल रही है। फर्नीचर के क्षेत्र में ही देखें तो पारंपरिक बढ़ईगिरी के साथ मॉड्यूलर फर्नीचर, मशीन कटिंग, डिजिटल डिजाइन और ऑनलाइन कारोबार तेजी से बढ़े हैं। ग्राहक अब डिजाइन, फिनिशिंग, समय और कीमत सभी को लेकर अधिक जागरूक हैं। ऐसे में पारंपरिक हुनर को आधुनिक तकनीक से जोड़ना समय की आवश्यकता है। यदि एक कारीगर अपने पारंपरिक अनुभव के साथ कंप्यूटर डिजाइन, आधुनिक मशीनों, डिजिटल मार्केटिंग और नए मैटेरियल का ज्ञान हासिल करता है तो उसके लिए बाजार के नए अवसर खुल सकते हैं। विश्वकर्मा पूजा का अवसर इस दिशा में आत्ममंथन का अवसर भी बन सकता है, क्या हमारा कौशल अगली पीढ़ी तक पहुंच रहा है? क्या हम नई तकनीक सीख रहे हैं? और क्या हमारी परंपरागत कला आधुनिक बाजार की जरूरतों के साथ आगे बढ़ रही है?

नई पीढ़ी और कौशल का भविष्य

आज देश में कौशल विकास को लेकर व्यापक चर्चा हो रही है। युवाओं को केवल डिग्री नहीं, बल्कि व्यावहारिक कौशल की आवश्यकता है। विश्वकर्मा महापूजा इस संदर्भ में नई पीढ़ी को एक महत्वपूर्ण संदेश दे सकती है, हुनर कभी छोटा नहीं होता।

बढ़ईगिरी, वेल्डिंग, इलेक्ट्रिकल कार्य, मशीन संचालन, ऑटोमोबाइल तकनीक, निर्माण कार्य, डिजाइनिंग और अन्य तकनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षित युवाओं के लिए रोजगार और उद्यमिता के अनेक अवसर मौजूद हैं। जरूरत इस बात की है कि पारंपरिक कारीगरी को आधुनिक प्रशिक्षण से जोड़ा जाए। अनुभवी कारीगरों का ज्ञान और युवा पीढ़ी की तकनीक समझ मिलकर एक नई शिल्प संस्कृति तैयार कर सकती है।

विश्वकर्मा पूजा और आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता केवल बड़े कारखानों और कंपनियों से नहीं आती। आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव छोटे उद्यमियों, कारीगरों, तकनीशियनों और स्थानीय उत्पादन से भी बनती है। एक छोटा फर्नीचर निमार्ता अपने क्षेत्र के कई लोगों को रोजगार दे सकता है। एक कुशल बढ़ई स्थानीय ग्राहकों की जरूरत पूरी कर सकता है। एक प्रशिक्षित तकनीशियन किसी मशीन को दोबारा उपयोगी बना सकता है। इस तरह प्रत्येक कुशल हाथ अर्थव्यवस्था में योगदान देता है। इसलिए विश्वकर्मा पूजा को आत्मनिर्भरता की भावना से जोड़कर देखना स्वाभाविक है। जब हाथ में हुनर, दिमाग में तकनीक और काम में ईमानदारी होती है, तो रोजगार मांगने वाला व्यक्ति रोजगार देने वाला भी बन सकता है।

पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी भी जरूरी

आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया के सामने बड़ी चुनौती है, तब धार्मिक और सामाजिक आयोजनों को भी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। विश्वकर्मा महापूजा के आयोजन में प्लास्टिक का कम उपयोग, पुनः उपयोग योग्य सजावट, जल संरक्षण, कचरे का उचित निपटान और पर्यावरण अनुकूल सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है। कार्यशालाओं और कारखानों में भी मशीनों के सुरक्षित एवं ऊर्जा-कुशल उपयोग, पुराने उपकरणों के उचित पुनर्चक्रण और कार्यस्थल की स्वच्छता पर ध्यान देना विश्वकर्मा पूजा की भावना को और सार्थक बना सकता है। क्योंकि सच्चा सृजन वही है जो मनुष्य के साथ प्रकृति के भविष्य का भी सम्मान करे।

पूजा से आगे बढ़कर संकल्प का पर्व

विश्वकर्मा महापूजा के दिन पूजा अर्चना, प्रसाद और सामूहिक आयोजन अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं। लेकिन इस पर्व की वास्तविक शक्ति उस संकल्प में है जो हम पूजा के साथ लेते हैं। एक कारीगर संकल्प ले सकता है कि वह अपने काम में गुणवत्ता से समझौता नहीं करेगा। एक नियोक्ता संकल्प ले सकता है कि वह अपने कर्मचारियों की सुरक्षा का ध्यान रखेगा। एक अनुभवी कारीगर संकल्प ले सकता है कि वह अपनी कला अगली पीढ़ी को सिखाएगा। एक युवा संकल्प ले सकता है कि वह पारंपरिक हुनर के साथ आधुनिक तकनीक भी सीखेगा। और समाज संकल्प ले सकता है कि वह श्रम करने वाले हाथों को सम्मान देगा।

विश्वकर्मा की परंपरा, भारत का भविष्य

भारत की शिल्प परंपरा हजारों वर्षों से विभिन्न रूपों में विकसित होती रही है। पत्थर की मूर्तियों से लेकर भव्य मंदिरों तक, लकड़ी की नक्काशी से लेकर आधुनिक फर्नीचर तक और पारंपरिक औजारों से लेकर अत्याधुनिक मशीनों तक, सृजन की यह यात्रा निरंतर जारी है। आज भारत दुनिया की तेजी से बदलती अर्थव्यवस्थाओं में अपनी भूमिका मजबूत कर रहा है। ऐसे समय में कौशल, नवाचार, उत्पादन और तकनीकी दक्षता की जरूरत पहले से अधिक है। विश्वकर्मा महापूजा इस पूरी यात्रा को सांस्कृतिक आधार देती है। यह हमें हमारी जड़ों की याद दिलाती है और साथ ही भविष्य की ओर देखने की प्रेरणा देती है।

भगवान विश्वकर्मा का संदेश केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा भी है।

कर्म से सृजन, कौशल से सम्मान

श्री विश्वकर्मा महापूजा को केवल पूजा के एक दिन तक सीमित करना इसके व्यापक अर्थ को छोटा करना होगा। यह पर्व हमें उन हाथों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर देता है, जिनके श्रम से हमारा घर, कार्यस्थल, शहर और देश आकार लेते हैं। यह हमें बताता है कि औजार का सम्मान केवल उसे फूल चढ़ाने में नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित और सही तरीके से इस्तेमाल करने में है। कारीगर का सम्मान केवल उसके काम की प्रशंसा करने में नहीं, बल्कि उसे उचित मेहनताना, सुरक्षित कार्यस्थल और आगे बढ़ने के अवसर देने में है। परंपरा का सम्मान केवल उसे दोहराने में नहीं, बल्कि उसे समय के साथ विकसित करने में है। आज जब दुनिया तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नए दौर में प्रवेश कर रही है, तब भी मनुष्य के हाथों का हुनर अपनी महत्ता बनाए हुए है। मशीनें उत्पादन को तेज कर सकती हैं, लेकिन कल्पना, अनुभव, संवेदना और रचनात्मकता को दिशा देने का काम मनुष्य ही करता है। इसलिए विश्वकर्मा महापूजा का संदेश आज पहले से कहीं अधिक व्यापक है,श्रम का सम्मान हो, कौशल का विकास हो, तकनीक का सदुपयोग हो और सृजन का उद्देश्य समाज का कल्याण हो।

भगवान विश्वकर्मा की आराधना वास्तव में उस सृजनशील शक्ति को नमन है, जिसने मानव सभ्यता को आगे बढ़ाया है। कर्म ही पूजा है, कौशल ही साधना है और सृजन ही सभ्यता की पहचान है। यही श्री विश्वकर्मा महापूजा का शाश्वत संदेश है।

बेटियों को मिला सहारा, आत्मनिर्भरता की राह हुई आसान

शामली @ कारपेंटर्स न्यूज। श्री विश्वकर्मा परिवार सहायता ट्रस्ट की ओर से समाज हित व महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सराहनीय पहल की गई। ट्रस्ट के पदाधिकारियों की उपस्थिति में दो बेटियों को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाने के उद्देश्य से आर्थिक एवं रोजगारपरक सहयोग प्रदान किया गया।

इस अवसर पर साक्षी स्वरूप पांचाल पुत्री राधेश्याम पांचाल, निवासी असंध, हरियाणा को उच्च शिक्षा एवं भविष्य निर्माण के लिए 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। वहीं राधा पांचाल, पुत्री संजय पांचाल, निवासी ग्राम मुंडेट, जिला शामली को आत्मनिर्भर बनने के उद्देश्य से सिलाई मशीन भेंट की गई। कार्यक्रम ट्रस्ट के वरिष्ठ पदाधिकारियों के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस दौरान ट्रस्ट के अध्यक्ष मैनपाल विश्वकर्मा, महामंत्री रमेश विश्वकर्मा, कोषाध्यक्ष प्रदीप पांचाल, उपाध्यक्ष रविन्द्र आर्य व मंच संचालक अशोक आर्य प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

इसके अलावा कार्यक्रम में इंजीनियर कन्हैया पांचाल, प्रवीण पांचाल, सोनू पांचाल और रामपाल पांचाल सहित अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद रहे। ट्रस्ट पदाधिकारियों ने कहा कि बेटियों की शिक्षा और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए किया गया सहयोग समाज को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने भविष्य में भी जरूरतमंद परिवारों और बेटियों की सहायता के लिए ऐसे कार्य जारी रखने की प्रतिबद्धता जताई।

रठैन में विश्वकर्मा परिवारों से मिला प्रतिनिधिमंडल, साहित्य संरक्षण पर हुई चर्चा

रामनगर @ कारपेंटर्स न्यूज। विश्वकर्मा लाइब्रेरी और विश्वकर्मा सभा के सदस्य रामनगर जाते समय जिला उधमपुर की तहसील उधमपुर स्थित रठैन गांव में एक बैठक के लिए रुके। उधमपुर-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे स्थित रठैन गांव जम्मू शहर से करीब 60 किलोमीटर दूर है। गांव में करीब 35 विश्वकर्मा परिवार रहते हैं, जो लगभग दो किलोमीटर के दायरे में बसे हुए हैं। रठैन के विश्वकर्मा परिवारों के साथ हुई बैठक गुरदियाल धीमान के निवास पर आयोजित की गई। इस अवसर पर मास्टर बोध राज धीमान सहित समाज के कई लोग उपस्थित रहे। बैठक के दौरान स्थानीय छात्रों और परिवारों के लिए पत्रिकाएं व नोटबुक गुरदियाल धीमान को सौंपी गई।

मास्टर बोध राज धीमान डोगरी भाषा के कवि भी हैं। इस अवसर पर उनसे अपनी कविताओं की पांडुलिपि प्रकाशन और संरक्षण के उद्देश्य से विश्वकर्मा लाइब्रेरी को उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया। उन्होंने इस पर सहमति व्यक्त की। बलवंत कटारिया ने कहा कि विश्वकर्मा लाइब्रेरी विश्वकर्मा समाज के लेखकों और साहित्यकारों की रचनाओं के संरक्षण और उनके प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि समाज की साहित्यिक विरासत को सुरक्षित रखना आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण है। इसके बाद प्रतिनिधिमंडल रामनगर पहुंचा। रामनगर कस्बे में करीब 50 विश्वकर्मा परिवार रहते हैं। इनमें बड़ी संख्या में लोग फर्नीचर व्यवसाय से जुड़े हैं। इसके अलावा समाज के कई लोग शिक्षक हैं जबकि कुछ सदस्य विभिन्न सरकारी विभागों में सेवाएं दे रहे हैं।

बैठक में शिव दत्त धीमान, ईश्वर राज (सोनी) पूर्व पंच, हरिप्रिया धीमान, शाम लाल धीमान, राकेश धीमान सहित अन्य लोग मौजूद रहे। मास्टर बोध राज धीमान सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रधानाध्यापक हैं, जबकि उनके एक भाई जल शक्ति विभाग में सहायक अभियंता के पद पर कार्यरत हैं। बैठक में उपस्थित लोगों ने बताया कि रामनगर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है और यहां का वातावरण एवं मौसम अपेक्षाकृत सुहावना रहता है। स्थानीय विश्वकर्मा परिवार सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों के प्रति जागरूक हैं व शिक्षा और व्यवसाय के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इस दौरान समाज की एकजुटता, शिक्षा, साहित्य संरक्षण और स्थानीय स्तर पर सामाजिक गतिविधियों को मजबूत करने को लेकर भी विचार-विमर्श किया गया।

मुंबई में 17 सितंबर को विभिन्न स्थानों पर विश्वकर्मा महापूजा

मुंबई @ कारपेंटर्स न्यूज। भगवान विश्वकर्मा की महापूजा के अवसर पर मुंबई में विश्वकर्मा समाज की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की ओर से 17 सितंबर को धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में पूजा-अर्चना, हवन, सामाजिक गोष्ठी, भजन-लोकगीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम और महाप्रसाद वितरण की तैयारियां की जा रही हैं। भारतीय परंपरा में भगवान विश्वकर्मा को देव शिल्पी माना जाता है और उन्हें शिल्प, वास्तु तथा निर्माण-कौशल से जुड़ी परंपराओं का आराध्य देव माना जाता है। विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर कारीगरों और तकनीकी कार्यों से जुड़े लोग अपने औजारों, उपकरणों और मशीनों की पूजा करते हैं।

विश्वकर्मा समिति, मुंबई की ओर से सांताक्रुज (पूर्व) स्थित समिति परिसर में निर्मित विश्वकर्मा मंदिर में पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठान किए जाएंगे। समिति के अध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा ने बताया कि

इसके बाद लोकगीत और सामाजिक गोष्ठी का आयोजन होगा तथा महाप्रसाद वितरित किया जाएगा। समिति के चेयरमैन सुनील राणा ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा सृजन, शिल्प, वास्तु और निर्माण-कौशल के आराध्य देव हैं। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा महोत्सव धार्मिक आस्था के साथ समाज की एकता, सद्भाव, सामाजिक समरसता और प्रगति का भी अवसर है। श्री विश्वकर्मा वेलफेयर ट्रस्ट की ओर से कांदिवली (पूर्व) के वडार पाड़ा रोड स्थित श्री विश्वकर्मा मंदिर में महापूजा का आयोजन किया जाएगा। ट्रस्ट के अध्यक्ष लालजी विश्वकर्मा ने बताया कि सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक पूजा और हवन के बाद सामाजिक गोष्ठी होगी। इसके बाद शिवम पांडेय, श्रेया यादव और सहयोगी भजन एवं लोकगीत प्रस्तुत करेंगे।

श्री विश्वकर्मा विकास समिति की ओर से बांगुर नगर, गोरेगांव (पश्चिम) स्थित नवजीवन संस्कार धाम में महापूजा महोत्सव की तैयारियां की जा रही हैं। नवजीवन श्री विश्वकर्मा सेवा समिति की ओर से सांताक्रुज (पूर्व) के वाकोला, धोबी घाट क्षेत्र में पूजा का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर नवजीवन समाज मंदिर में कड़ेदीन विश्वकर्मा की अध्यक्षता में बैठक हुई, जिसमें सदस्यों ने आयोजन की रूपरेखा पर चर्चा की। बिहार विश्वकर्मा समाज सेवा संघ, धारावी की ओर से गोल्ड फील्ड कंपाउंड में तीन दिवसीय महापूजा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। संस्था के अध्यक्ष सुखदेव शर्मा ने बताया कि 17 सितंबर को मुख्य पूजा, 18 सितंबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम और 19 सितंबर को प्रतिमा विसर्जन किया जाएगा।

भारतीय श्री विश्वकर्मा कल्याण समाज की ओर से अंधेरी (पूर्व) के निकोलसवाड़ी स्थित इच्छापूर्ति श्री विश्वकर्मा मंदिर में विश्वकर्मा पूजा आयोजित की जाएगी। संस्था के अध्यक्ष रमेश विश्वकर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में समाज के लोगों के साथ कारीगरों और शिल्प से जुड़े लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। श्री विश्वकर्मा कल्याण मंडल, कुर्ला की ओर से मसरानी लेन, हलाव पुल स्थित संस्था परिसर में निर्मित श्री विश्वकर्मा मंदिर में सार्वजनिक विश्वकर्मा पूजा महोत्सव मनाया जाएगा। संस्था के मंत्री डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि महोत्सव के तहत काव्य गोष्ठी सहित अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। श्री विश्वकर्मा सेवा संस्था की ओर से भांडुप (पश्चिम) के गांवदेवी रोड स्थित मौर्य हाल में विश्वकर्मा पूजा महोत्सव मनाया जाएगा। संस्था के अध्यक्ष डॉ. पारसनाथ विश्वकर्मा ने बताया कि 17 सितंबर को होने वाली पूजा की तैयारियों को लेकर मासिक बैठक में चर्चा की गई। सदस्यों ने आयोजन से संबंधित तैयारियां समय पर पूरी करने पर जोर दिया। इसके अलावा झारखंड जनकल्याण सेवा संघ की ओर से वडाला (पूर्व) में बरकत अली नाका के पास सार्वजनिक श्री विश्वकर्मा महापूजा आयोजित की जाएगी। श्री विश्वकर्मा प्रगति संस्था की ओर से कांदिवली (पश्चिम) के लालजी पाड़ा और राष्ट्रीय विश्वकर्मा महासंघ की ओर से कांदिवली (पश्चिम) के चारकोप, गणेश नगर में विश्वकर्मा पूजा का आयोजन किया जाएगा। आयोजकों के अनुसार विभिन्न स्थानों पर होने वाले इन कार्यक्रमों में समाज के लोगों के अलावा कारीगरों, शिल्पकारों और निर्माण व तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोगों के भाग लेने की संभावना है।

NIKHIL
ADHESIVES LTD.
Mahacol®
SINCE 1971
श्री विश्वकर्मा महापूजा
की हार्दिक शुभकामनाएं
भगवान विश्वकर्मा के आशीर्वाद से
हर निर्माण बने मज़बूत, हर जोड़ रहे अटूट |
NAIL FREE
SUPER HEATFIT
MICA SPECIAL
PLUS PV STICK
GOLD MAHAQUICK
N3 ULTRA
MP
German Technology

CUMI SINCE 1954
70 YEARS
CUMI
उन हाथों को सलाम
जो लकड़ी में जान भरते हैं,
कौशल से खूबसूरती गढ़ते हैं,
और उसे पूर्णता तराशते हैं।
कला में माहिर हाथ
सहनशील हाथ
हुनरमंद हाथ
शुरुआती हाथ
तजुर्बेकार हाथ
CUMI से वुडवर्किंग के लिए पूरा हल।
MADE IN INDIA
AJAX
JAWAN BRAND
SAND MASTER
SPEED
TEZZ
Concord
Connect With Us Today
80351 20000
email@cumi.murugappa.com
Contact: Pawan Mishra
+91 85911 57851
For Enquiries,
Visit our Website

HARRISON®
Glorious 75+ Years
करीगर भाइयों को
गणेश महोत्सव
की हार्दिक शुभकामनाएँ!
कारपेन्टर सुविधा स्कीम
जीतो आकर्षक उपहार
9:02 PM
टोल फ्री नंबर : 1800-572-5795 | भरोसा सुरक्षा का
www.harrisonlocks.com | email : info@harrisonlocks.com
नॉट:- ऊपर दर्शायी गई फोटो सिर्फ उपहार को दर्शाने हेतु है मिलने वाला उपहार इनमे से भिन्न हो सकता है : रंग मॉडल इत्यादि।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
95992 81937

~ घर घर हरीसन
अब हर घर में हरीसन ~

HARRISON | हरीसन

हरीसन कारपेंटर्स महासम्मेलन – हुनर का महोत्सव, सम्मान का उत्सव।

विजेता

हरीसन ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ द्वारा आयोजित "हरीसन कारपेंटर्स महासम्मेलन" का भव्य आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों दक्ष कारपेंटर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम कारीगरों के समर्पण, मेहनत और उत्कृष्टता को सम्मानित करने हेतु आयोजित किया गया था। आयोजन में हरीसन के वरिष्ठ अधिकारियों ने प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, उपहार व विशेष सम्मान प्रदान किए। मंच पर

हुनर की पहचान
कारीगरों को सम्मान!

डिज़ाइन innovation, आधुनिक उपकरणों के उपयोग और Quality work पर संवाद हुआ। साथ ही, कंपनी ने अपने आगामी उत्पादों की झलक भी प्रस्तुत की। यह महासम्मेलन हरीसन की उस भावना को दर्शाता है जिसमें वह अपने कारपेंटर्स को केवल भागीदार नहीं, बल्कि अपने परिवार का अहम हिस्सा मानता है। यह आयोजन हर वर्ष नई प्रेरणा लेकर आता है।

हरीसन प्रोडक्ट पॉइंट अर्जित करने का तरीका किया और भी आसान

मात्र क्यू आर कोड को स्कैन करने पर पाएं उपहार

हरीसन का नया QR स्कैनिंग फीचर – कारपेंटर्स के लिए आसान इनाम!
देश के भरोसेमंद ब्रांड हरीसन ने कारपेंटर्स के लिए QR स्कैनिंग फीचर लॉन्च किया है, जिससे उपहार जीतना अब और भी आसान हो गया है।
कारपेंटर्स को हरीसन प्रोडक्ट की पैकिंग में दिए गए QR कोड को स्कैन करना है, और उनके रजिस्टर्ड प्रोफाइल पर पॉइंट्स अपने आप जुड़ जाएंगे। अब प्रोडक्ट की कटिंग संभालने की जरूरत नहीं, बस स्कैन करें और इनाम पाएं।
यह पहल कारपेंटर्स की सहूलियत और प्रोत्साहन के लिए की गई है। हरीसन हमेशा अपने कारीगरों के साथ खड़ा है!

उपहार जीतने की प्रक्रिया

- स्टेप 1: मोबाइल मे हरीसन सुविधा एप्लीकेशन डाउनलोड करे, और अपनी ID बनाकर लॉगिन करे।
- स्टेप 2: प्रोडक्ट पैक के अंदर लगे QR CODE को सुविधा एप्लीकेशन मे स्कैन करे और MRP के बराबर पॉइंट इकठ्ठा करे।
- स्टेप 3: दिये गये 6 उपहार के आधार पर अपने पॉइंट REDEEM करे, और उपहार जीते

Suvidha
iSoftCare Technology

प्ले स्टोर पर (HARRISON SUVIDHA APP) सर्च कर के हरीसन लोगो एप्लीकेशन अपने फ़ोन मे इनस्टॉल करे।

हरीसन ने कारीगरों के हुनर को दिया सम्मान

मेहनत और समर्पण को मिली नई पहचान

कारपेन्टर सुविधा स्कीम winner

Harrison ने किया हुनर का सम्मान

कारीगरों की मेहनत, हुनर और समर्पण को सम्मान देते हुए Harrison ने अपने Champion Carpenters को विशेष उपहार देकर सम्मानित किया। यह पहल कारीगरों के उत्कृष्ट कार्य और निरंतर मेहनत के प्रति Harrison की सराहना का प्रतीक है।

Harrison का मानना है कि एक कुशल Carpenter केवल निर्माण नहीं करता, बल्कि अपने हुनर से हर काम को बेहतर और खास बनाता है। Champion Carpenters को सम्मानित कर Harrison ने उनके योगदान को पहचान देने और उन्हें आगे भी उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रेरित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

हुनर की जीत, मेहनत का सम्मान!

#harrison_carpentermeet

Find Us On : | Toll Free No. 1800-572-5795

Advt

Pidilite
जो
FALCOFIX®
लगाए,
वो कभी ना पछताये!
FALCOFIX
WR
FALCOFIX
WR GOLD
FALCOFIX
ULTRA MARINE
Pidilite
काम फटाफट,
फर्नीचर चकाचक.
BLUECOAT®
BLUECOAT
D3
BLUECOAT
D3 GOLD
BLUECOAT
D3 MAX
FBK
STARS
A User Reward Programme
हम आपकी
सेवा के लिए
हमेशा तैयार हैं
FBK
Customer Care-
9377796000

नया घर हो, विवाह का शुभ अवसर, व्यापार की शुरूआत या किसी महत्वपूर्ण कार्य का पहला कदम, भारतीय परंपरा में सबसे पहले जिस देवता का स्मरण किया जाता है, वे हैं भगवान गणेश। हाथी का मस्तक, विशाल उदर, एकदंत स्वरूप और मूषक को वाहन बनाए गणपति का यह रूप जितना सहज दिखाई देता है, उसका प्रतीकात्मक अर्थ उतना ही गहरा है। उन्हें विघ्नहर्ता, सिद्धिदाता, बुद्धि-विवेक के देवता और मंगलमूर्ति कहा जाता है।

विघ्नहर्ता गणेश: जिनके स्मरण से शुरू होता है हर शुभ काम

महाभारत के लेखन से लेकर काशी में शिव की वापसी तक, गणपति से जुड़े हैं अद्भुत पौराणिक प्रसंग

गणेश चतुर्थी पर जब घर-घर और सार्वजनिक पंडालों में गणपति बप्पा मोरया की गूंज सुनाई देती है, तो यह केवल धार्मिक उत्सव नहीं रहता, बल्कि सदियों पुरानी आस्था, परंपरा और लोकजीवन का जीवंत पर्व बन जाता है। गणेश से जुड़ी पौराणिक कथाएं भारतीय संस्कृति में उनकी बहुआयामी भूमिका को सामने लाती हैं। कहीं वे देवताओं के संकटमोचक बनकर आते हैं, कहीं अपनी बुद्धिमत्ता से कठिन परिस्थितियों का समाधान करते हैं और कहीं उनका अद्भुत स्वरूप जीवन के गहरे संदेश देता है।

जब काशी लौटना चाहते थे भगवान शिव

भगवान गणेश से जुड़े रोचक पौराणिक प्रसंगों में काशी से संबंधित कथा का विशेष स्थान है। इसका विस्तृत वर्णन स्कंद पुराण के काशीखंड में मिलता है। पौराणिक कथा के अनुसार एक समय पृथ्वी पर भीषण अकाल पड़ा। वर्षा न होने से प्रजा त्रस्त थी। ऐसी स्थिति में ब्रह्मा ने रिपुंजय नामक क्षत्रिय कुमार से पृथ्वी का शासन संभालने का आग्रह किया। रिपुंजय ने शर्त रखी कि देवता पृथ्वी छोड़कर अपने-अपने लोकों में चले जाएं। शर्त स्वीकार कर ली गई और रिपुंजय ने पृथ्वी का शासन संभाला। उन्हें दिवोदास के नाम से जाना गया। उन्होंने काशी को अपनी राजधानी बनाया। कथा के अनुसार दिवोदास का शासन इतना सुचारु था कि राज्य में प्रजा सुखी और समृद्ध रहने लगी। न कोई रोगी था, न कोई दरिद्र और न ही अकाल मृत्यु का भय। लेकिन काशी से दूर रहना भगवान शिव के लिए कठिन था। काशी को शिव की प्रिय नगरी माना जाता है। उन्होंने वहां लौटने के लिए कई प्रयास किए। जिन लोगों को उन्होंने काशी भेजा, वे वहां की सुख-समृद्धि और सुव्यवस्था से इतने प्रभावित हुए कि वापस ही नहीं लौटे।

गणेश ने संभाला दायित्व

अंततः भगवान गणेश ने शिव-पार्वती को काशी वापस लाने का दायित्व अपने ऊपर लिया। कथा के अनुसार, वे ज्योतिषी का रूप धारण कर काशी पहुंचे। उनकी विद्वता और ज्योतिष-ज्ञान की चर्चा राजा दिवोदास तक पहुंची। इसके बाद घटनाक्रम तेजी से बदला और कथा के अनुसार दिवोदास को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना पड़ा। अंततः वह समय आया, जब भगवान शिव और माता पार्वती ने काशी में पुनः प्रवेश किया। इस कथा में गणेश केवल विघ्नहर्ता ही नहीं, बल्कि बुद्धि और रणनीति से कठिन कार्य पूरा करने वाले देवता के रूप में सामने आते हैं।

महाभारत को शब्द देने वाले गणेश

गणेश की बुद्धिमत्ता से जुड़ा सबसे प्रसिद्ध प्रसंग महाभारत के लेखन से संबंधित है। मान्यता है कि महर्षि वेदव्यास महाभारत की रचना कर रहे थे और उन्हें ऐसे लेखक की आवश्यकता थी, जो उनके कथन को लगातार लिख सके। उन्होंने गणेश को यह दायित्व सौंपा। गणेश ने शर्त रखी कि वेदव्यास कथा सुनाते समय बीच में नहीं रुकेंगे। वेदव्यास ने भी अपनी शर्त रख दी कि गणेश किसी भी श्लोक को उसका अर्थ समझे बिना नहीं लिखेंगे।

कथा के अनुसार जब वेदव्यास को अगले श्लोकों की रचना के लिए समय चाहिए होता, तो वे जटिल अर्थ वाले श्लोक बोलते। गणेश उनके अर्थ पर विचार करते और इस बीच वेदव्यास आगे की रचना कर लेते। इस कथा का सबसे बड़ा संदेश यही है कि ज्ञान केवल गति से नहीं, बल्कि समझ और विवेक से पूर्ण होता है।

एकदंत बनने की कथा

गणेश का एक दांत टूटा हुआ दिखाई देता है और इसी कारण उन्हें एकदंत कहा जाता है। उनके टूटे दांत से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। एक मान्यता महाभारत के लेखन से भी जुड़ी है। कथा के अनुसार लेखन के दौरान जब लेखनी टूट गई, तो गणेश ने बिना समय गंवाए अपना एक दांत तोड़कर उसे लेखनी के रूप में इस्तेमाल किया। यह प्रसंग त्याग और संकल्प का प्रतीक माना जाता है, ज्ञान और कर्तव्य के मार्ग में आने वाली बाधा के सामने रुकना नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर स्वयं का त्याग करके भी लक्ष्य पूरा करना।

मूषक क्यों बना गणपति का वाहन?

गणेश के विशाल स्वरूप के सामने उनका छोटा-सा वाहन मूषक सहज ही लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। आखिर इतने विशाल देवता का वाहन एक छोटा-सा मूषक क्यों?

पौराणिक कथाओं में इसका उत्तर अलग-अलग रूपों में मिलता है। एक प्रसिद्ध कथा में गजमुखासुर नामक दैत्य का उल्लेख है। गणेश के साथ युद्ध के बाद वह मूषक के रूप में परिवर्तित हुआ और अंततः गणेश का वाहन बन गया। कई परंपराओं में मूषक को चंचल मन, इच्छाओं और वासनाओं का प्रतीक माना गया है। गणेश का उस पर सवार होना इस बात का संकेत है कि बुद्धि और विवेक के माध्यम से मन की चंचलता तथा इच्छाओं पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

गणेश का स्वरूप देता है जीवन का संदेश

गणपति की प्रतिमा का प्रत्येक अंग अपने भीतर एक संदेश समेटे हुए माना जाता है।

बड़ा मस्तक- बड़े विचारों और व्यापक सोच का प्रतीक।

बड़े कान- अधिक सुनने और कम बोलने की सीख।

छोटी आंखें- एकाग्रता और सूक्ष्म दृष्टि का संकेत।

लंबी सूंड- परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता।

विशाल उदर- जीवन की अच्छी-बुरी परिस्थितियों को धैर्य के साथ स्वीकार करने का संदेश।

एकदंत- त्याग, संकल्प और लक्ष्य के प्रति समर्पण का प्रतीक।

मूषक वाहन- इच्छाओं और चंचल मन पर विवेक के नियंत्रण का संकेत।

यही कारण है कि गणेश केवल पूजा के देवता नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन में बुद्धि, विवेक, धैर्य और कर्मशीलता के प्रतीक के रूप में भी देखे जाते हैं।

गणेश चतुर्थी: घर से लेकर जन-उत्सव तक

गणेश चतुर्थी भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती है। महाराष्ट्र में इस पर्व ने विशेष रूप से व्यापक सार्वजनिक स्वरूप ग्रहण किया। घरों में गणपति की स्थापना से लेकर विशाल सार्वजनिक पंडालों तक, यह उत्सव धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकजुटता का भी माध्यम बन गया है।

गणपति स्थापना के दौरान मंत्रोच्चार, आरती और भक्ति गीतों से वातावरण भक्तिमय हो उठता है। बच्चे हों या बुजुर्ग, हर वर्ग इस उत्सव से जुड़ता है। कई स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक जागरूकता अभियान और सेवा गतिविधियां भी आयोजित की जाती हैं।

इस तरह गणेशोत्सव केवल पूजा की परंपरा नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाला लोकपर्व बन गया है।

बप्पा में क्यों दिखाई देती है अपनत्व की भावना?

भारतीय देवी-देवताओं में गणेश को बप्पा कहकर पुकारने की परंपरा विशेष आत्मीयता पैदा करती है। उनके बाल स्वरूप और सरल व्यक्तित्व के कारण भक्तों का उनसे सहज संबंध बनता है। शायद यही कारण है कि गणपति की विदाई के समय भी भक्तों की आंखें नम हो जाती हैं। विसर्जन के दौरान गूंजता है–

गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ।

यह केवल विदाई का उद्घोष नहीं, बल्कि अगले वर्ष फिर बप्पा के आगमन की प्रतीक्षा का भाव है।

विघ्नहर्ता का संदेश

गणेश चतुर्थी हमें केवल गणपति की पूजा करने का अवसर नहीं देती, बल्कि उनके स्वरूप में छिपे जीवन-मूल्यों को समझने का अवसर भी देती है। विघ्न आएं तो धैर्य रखें, कठिनाई आए तो बुद्धि का प्रयोग करें, लक्ष्य सामने हो तो संकल्प से पीछे न हटें और सफलता मिले तो विनम्र बने रहें- गणेश का स्वरूप इन सभी मूल्यों की याद दिलाता है।

इसीलिए किसी भी शुभ कार्य से पहले गणेश का स्मरण किया जाता है। भारतीय आस्था में गणपति केवल विघ्न दूर करने वाले देवता नहीं, बल्कि उस शुभ शुरूआत के प्रतीक हैं, जो मनुष्य को बुद्धि, विवेक और विश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

धर्म और कर्म से दूरी ने घटाई मानवता, आत्मचिंतन से ही होगा समाज का सुधार

भरतपुर @ कारपेंटर्स न्यूज। कामवन तीर्थराज विमल कुंड स्थित हरि कृपा आश्रम के संस्थापक, हरि कृपा पीठाधीश्वर एवं विश्वविख्यात संत स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज ने कहा कि मनुष्य के जीवन में धर्म, कर्म, सदाचार और मानवता का गहरा संबंध है। जब व्यक्ति अपने कर्तव्यों और धर्म से विमुख होता है तो उसके जीवन से संवेदनशीलता और मानवता भी धीरे-धीरे कम होने लगती है। आज समाज में दिखाई दे रही अनेक समस्याओं का मूल कारण यही है कि मनुष्य ने भौतिक सुख-सुविधाओं को जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लिया है और अपने आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों से दूर होता जा रहा है।

हरि कृपा आश्रम में उपस्थित विशाल भक्त समुदाय को संबोधित करते हुए स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज ने कहा कि अधर्माचरण करने वाले और कुमार्ग पर ले जाने वाले लोगों का संग छोड़कर जितेंद्रिय, सदाचारी एवं श्रेष्ठ महापुरुषों का संग करना चाहिए। सत्पुरुषों का जीवन और उनका आचरण समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है। उनके विचारों, व्यवहार और सेवा भावना से सीख लेकर व्यक्ति अपने जीवन को सही दिशा दे सकता है।

उन्होंने कहा कि सत्संग मनुष्य के अंतर्मन को प्रकाशित करने वाला प्रकाश है। सत्संग के माध्यम से व्यक्ति को अपने जीवन की वास्तविकता, कर्तव्य और परमात्मा के प्रति अपने संबंध का बोध होता है। लेकिन केवल सत्संग में उपस्थित होना पर्याप्त नहीं है। सत्संग से प्राप्त ज्ञान को अपने आचरण और व्यवहार में उतारना भी आवश्यक है। जब तक व्यक्ति सत्य का संग नहीं करेगा और सत्य को अपने जीवन का आधार नहीं बनाएगा, तब तक सत्संग का वास्तविक लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

महाराज ने इसे सूर्य की किरणों का उदाहरण देते हुए समझाया कि जिस प्रकार सूर्य की किरणें हमारे घर तक पहुंचने के बावजूद बंद दरवाजे और खिड़कियों के कारण भीतर प्रवेश नहीं कर पाती, उसी प्रकार गुरु और परमात्मा की कृपा भी हमारे जीवन में तभी प्रभावी होती है, जब हम अपने अंतर्मन के द्वार खोलकर उनके ज्ञान को स्वीकार करें। ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ उसे जीवन में धारण करना ही वास्तविक साधना है।

उन्होंने कहा कि असत्य, अधर्म, अन्याय और बुराई कुछ समय के लिए भले ही प्रभावशाली और फलते-फूलते दिखाई दें, लेकिन उसका परिणाम कभी स्थायी नहीं होता। अंतिम विजय सत्य, धर्म, न्याय और अच्छाई की ही होती है। इसलिए मनुष्य को परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपने सिद्धांतों और मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। जीवन में आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना धैर्य और विश्वास के साथ करना चाहिए।

स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज ने कहा कि हमारे धार्मिक व सांस्कृतिक पर्व केवल उत्सव मनाने के अवसर नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे गहरे आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश छिपे हैं। हमें इन पर्वों के प्रतीकात्मक संदेशों को समझकर अपने जीवन में उतारना चाहिए। हमारा जीवन दिव्य, मर्यादित, कर्तव्यपरायण, प्रभु भक्तिमय तथा राष्ट्रीयता और मानवता की भावना से ओतप्रोत होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज समाज में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की जा रही है, लेकिन समाज को बदलने के लिए सबसे पहले व्यक्ति को अपनी सोच और दृष्टिकोण बदलना होगा। हम अक्सर दूसरों की कमियां देखकर उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं, जबकि वास्तविक सुधार की शुरूआत स्वयं से होनी चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण, व्यवहार और कर्तव्यों के प्रति ईमानदार हो जाए तो परिवार, समाज और राष्ट्र में सकारात्मक परिवर्तन अपने आप दिखाई देने लगेगा।

महाराज ने कहा कि जीवन में आने वाली विपत्तियां, बाधाएं और परेशानियां मनुष्य की परीक्षा लेने के साथ-साथ उसे मजबूत भी बनाती हैं। जो व्यक्ति कठिन परिस्थितियों से भागने के बजाय उनका साहसपूर्वक सामना करता है, वही जीवन के विकास और सफलता का वास्तविक आनंद प्राप्त करता है। संघर्ष से घबराने के बजाय उससे सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए।

उन्होंने धर्म के वैज्ञानिक पक्ष पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि धर्म के वैज्ञानिक तथ्यों को न समझने और उन्हें नकारने के कारण समाज में ढोंग, पाखंड और आडंबर को बढ़ावा मिला है। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को भयभीत करना नहीं, बल्कि उसे सत्य, संयम, सेवा, सदाचार और आत्मबोध का मार्ग दिखाना है। धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने और उसके मूल सिद्धांतों को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज हमारे पवित्र भारत देश में भी अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, घृणा और विद्वेष का वातावरण बढ़ता दिखाई दे रहा है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच का अंतर भुला दिया है। अधिक से अधिक भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त करना ही जीवन का परम लक्ष्य बन गया है। इसके कारण संतोष, सेवा, त्याग, करुणा और परोपकार जैसे मानवीय गुण पीछे छूटते जा रहे हैं।

स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज ने कहा कि भौतिक उन्नति आवश्यक है, लेकिन उसके साथ आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति भी उतनी ही जरूरी है। मनुष्य के पास धन, संपत्ति और आधुनिक सुविधाएं तो हों, लेकिन यदि उसके भीतर प्रेम, करुणा, सत्य, धर्म और मानवता नहीं है तो उसका जीवन वास्तविक अर्थों में समृद्ध नहीं कहा जा सकता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में धर्म और कर्म के साथ मानवता, सेवा और सदाचार को भी सर्वोच्च स्थान देना चाहिए।

उन्होंने भक्तों से आह्वान किया कि वे सत्संग और सद्गुरु के मार्गदर्शन से प्राप्त ज्ञान को केवल सुनने तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपने व्यवहार और जीवनशैली का हिस्सा बनाएं। सत्य, धर्म और मानवता के मार्ग पर चलते हुए स्वयं के जीवन को बेहतर बनाने के साथ समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करें। यही सत्संग की सार्थकता और मानव जीवन की वास्तविक सफलता है।

जायका इंडिया का

पोहा-चुकंदर चीज बॉल्स

नाश्ते या शाम की चाय के साथ कुछ नया और स्वादिष्ट बनाने का मन हो, तो पोहा-चुकंदर चीज बॉल्स एक बेहतरीन विकल्प हैं। पोहे और चुकंदर की पौष्टिकता के साथ चीज का स्वाद इसे खास बनाता है। बाहर से कुरकुरे और अंदर से मुलायम व चीजी ये बॉल्स बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को पसंद आएंगे। इसे हरी चटनी या टमाटर सॉस के साथ गरमा गरम परोसें।

सामग्री – मोटा पोहा 1 कप, चुकंदर 1, उबले आलू 2, मोजरेला चीज ½ कप, हरी मिर्च 2, अदरक ½ चम्मच, हरा धनिया ½ कटोरी, ब्रेड क्रम्ब्स 2 कप, कॉर्नफ्लोर 2 बड़े चम्मच, भुना जीरा पाउडर ½ चम्मच, काली मिर्च पाउडर ½ चम्मच, लाल मिर्च पाउडर ½ चम्मच, गरम मसाला ½ चम्मच, चाट मसाला ½ चम्मच, नमक स्वादानुसार,

विधि – सबसे पहले पोहे को अच्छी तरह धोकर 2-3 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। इसके बाद पोहे को छलनी में डालकर अतिरिक्त पानी निकलने दें। अब चुकंदर को कद्दूकस कर लें और उसका अतिरिक्त पानी भी अच्छी तरह निचोड़ लें। एक बड़े बाउल में पोहा, चुकंदर, उबले और मैश किए हुए आलू, बारीक कटी हरी मिर्च, अदरक और हरा धनिया डालें। इसमें भुना जीरा पाउडर, काली मिर्च, लाल मिर्च, गरम मसाला, चाट मसाला और नमक डालकर अच्छी तरह मिलाएं। अब मिश्रण में ब्रेड क्रम्ब्स डालकर अच्छी तरह मिलाएं, ताकि मिश्रण बॉल्स बनाने लायक सख्त हो जाए। मिश्रण की छोटी-छोटी लोइयां बनाएं। प्रत्येक लोई के बीच में थोड़ा मोजरेला चीज रखें और उसे चारों ओर से बंद करके गोल बॉल का आकार दें। इसी तरह सभी बॉल्स तैयार कर लें। एक बाउल में कॉर्नफ्लोर और थोड़ा पानी मिलाकर पतला घोल तैयार करें। प्रत्येक बॉल को पहले कॉर्नफ्लोर के घोल में डुबोएं और फिर ब्रेड क्रम्ब्स में अच्छी तरह लपेटें। अब कड़ाही में तेल गर्म करें। तेल गर्म होने पर बॉल्स को मध्यम आंच पर सुनहरा और कुरकुरा होने तक तलें। तैयार चीज बॉल्स को अतिरिक्त तेल निकालने के लिए टिश्यू पेपर पर रखें। गरमागरम पोहा-चुकंदर चीज बॉल्स को हरी चटनी या टमाटर सॉस के साथ परोसें।

सेहत

क्या आपको भी किडनी के पास होता है दर्द?

किडनी के आसपास या पीठ के निचले हिस्से में दर्द होने पर अक्सर लोग इसे सामान्य कमर दर्द या किडनी में पथरी की समस्या मानकर नजरअंदाज कर देते हैं। कई बार इसका कारण वास्तव में पथरी या दूसरी सामान्य समस्या हो सकती है, लेकिन यदि दर्द लगातार बना रहे, बढ़ता जाए या उसके साथ पेशाब में खून, बिना कारण वजन कम होना अथवा लगातार थकान जैसे लक्षण दिखाई दें, तो चिकित्सकीय जांच कराना जरूरी है। ऐसे लक्षण किडनी की गंभीर बीमारी सहित कई अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़े हो सकते हैं।

दर्द के स्वरूप में हो सकता है अंतर

किडनी की पथरी में दर्द अक्सर अचानक शुरू होकर काफी तेज हो सकता है और कभी-कभी लहरों की तरह आता-जाता है। इसके विपरीत, किडनी से जुड़ी कुछ गंभीर बीमारियों में दर्द लगातार बना रह सकता है या धीरे-धीरे बढ़ सकता है। हालांकि केवल दर्द के आधार पर पथरी और किडनी कैंसर में अंतर करना संभव नहीं है। इसलिए लंबे समय तक रहने वाले या बार-बार होने वाले दर्द की चिकित्सकीय जांच जरूरी है।

इन संकेतों पर दें विशेष ध्यान

पेशाब में खून – यदि बिना किसी स्पष्ट कारण के पेशाब लाल, गुलाबी या भूरा दिखाई दे, तो इसे नजरअंदाज न करें। पेशाब में खून किडनी या मूत्र संबंधी कई समस्याओं का संकेत हो सकता है और इसकी जांच आवश्यक है।

लगातार कमर या बाजू में दर्द – कमर के एक तरफ या किडनी के आसपास लगातार दर्द बना रहे और उसका कोई स्पष्ट कारण सामने न आए, तो डॉक्टर से सलाह लेना उचित है।

बिना कारण वजन कम होना – खानपान या दिनचर्या में कोई विशेष बदलाव न होने के बावजूद तेजी से वजन कम होना किसी गंभीर स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकता है।

थकान और कमजोरी – लगातार थकान, कमजोरी या सामान्य काम करने में भी परेशानी महसूस होना भी जांच की जरूरत का संकेत हो सकता है।

बार-बार बुखार – लंबे समय तक रहने वाला या बार-बार आने वाला बुखार भी चिकित्सकीय परामर्श की वजह हो सकता है, खासकर जब इसके साथ अन्य लक्षण भी मौजूद हों।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक-गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा द्वारा 306, दिघे नगर को आप हाउसिंग सोसायटी, फितवाला रोड, एलफिन्स्टन (वेस्ट), मुंबई-40013 से प्रकाशित एवं एस आर पब्लिकेशन, मोहन अर्जुन कम्पाउंड, गाला नम्बर-8, 9, 10, घर्टनपाढा, वैशाली नगर लास्ट बस स्टॉप, नियर भारत गैस गोडाउन, दहिसर (ईस्ट), मुंबई- 400068 से मुद्रित। संपादक - गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा* RNI NO. MAHHIN/2005/16460 मो. 09320566633. (सभी विवादों का निपटारा न्यायक्षेत्र केवल मुंबई न्यायालय के अधीन होगा. *पी. आर. बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

टूल किट नहीं, शिक्षा और रोजगार चाहिए

पूर्व मंत्री ने भाजपा सरकार पर विश्वकर्मा समाज के हितों की अनदेखी का लगाया आरोप, कहा– सम्मान और अधिकार की लड़ाई जारी रहेगी

गोरखपुर @ कारपेंटर्स न्यूज। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री राम आसरे विश्वकर्मा ने भाजपा सरकार पर विश्वकर्मा समाज की उपेक्षा और उसके हित में पूर्ववर्ती सरकार द्वारा किए गए कार्यों को समाप्त करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया था, जिसे भाजपा सरकार ने निरस्त कर दिया। यह विश्वकर्मा समाज की भावनाओं का अपमान है। गोरखपुर के चिल्लूपार विधानसभा क्षेत्र स्थित गोला बाजार के नारायण रिसॉर्ट में आयोजित विश्वकर्मा समाज की पीडीए जन पंचायत को संबोधित करते हुए राम आसरे विश्वकर्मा ने कहा कि सपा सरकार के कार्यकाल में विश्वकर्मा समाज के हित में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए थे। इनमें विश्वकर्मा पूजा की छुट्टी, युवाओं को आईटीआई प्रमाणपत्र उपलब्ध कराने व कुटीर उद्योग के लिए जमीन के पट्टे से संबंधित आदेश शामिल थे। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने इन फैसलों को निरस्त कर समाज के साथ अन्याय किया है।

उन्होंने केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि यह योजना लोहार, बढ़ई, सुनार, कुम्हार, नाई सहित पारंपरिक कारीगर वर्गों के युवाओं को शिक्षा, नौकरी और रोजगार के पर्याप्त अवसर देने के बजाय उन्हें टूल किट देकर मजदूरी तक सीमित करने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव गरीब और पिछड़े वर्ग के युवाओं को शिक्षा के माध्यम से अधिकारी बनाना चाहते हैं, जबकि भाजपा सरकार उन्हें टूल किट देकर मजदूर बनाना चाहती है।

पूर्व मंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार पिछड़े और दलित समाज को धर्म के मुद्दों में उलझाकर वोट हासिल करती है, जबकि पीडीए वर्ग के साथ अन्याय हो रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश में हत्या, दुष्कर्म और अन्याय की घटनाओं में पीडीए वर्ग को निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने विश्वकर्मा समाज से जुड़े विभिन्न मामलों का उल्लेख करते हुए सरकार पर आरोप लगाया कि पीड़ित परिवारों को अपेक्षित न्याय और सहायता नहीं मिल रही है।

राम आसरे विश्वकर्मा ने कहा कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने विश्वकर्मा समाज के पीड़ित परिवारों की मदद और उन्हें न्याय दिलाने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार को हटाकर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाना जरूरी है, तभी पीडीए समाज को न्याय और सम्मान मिल सकेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विधानसभा अध्यक्ष चंद्रमणि विश्वकर्मा ने की, जबकि संचालन जिलाध्यक्ष यशपाल विश्वकर्मा ने किया। जन पंचायत को पूर्व विधायक विनय तिवारी, जिलाध्यक्ष ब्रजेश गौतम, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राम नगीना साहनी, पूर्व जिलाध्यक्ष अवधेश यादव, यशपाल विश्वकर्मा, फूलचंद विश्वकर्मा, रमेश विश्वकर्मा, बाबूराम विश्वकर्मा, राधेश्याम विश्वकर्मा, चंदन विश्वकर्मा, रामकिशुन विश्वकर्मा, संतोष विश्वकर्मा, डॉ. कन्हैयालाल विश्वकर्मा, विश्वकर्मा ब्रिगेड के जिलाध्यक्ष अमित विश्वकर्मा, रामनाथ यादव, मिर्जा कदीर बेग, अमरजीत यादव, लालजी यादव, राजेश भारती और इंद्रेश यादव सहित अन्य वक्ताओं ने संबोधित किया।

250 साल पुराने डोगरी कवि लक्खू लोहार के इतिहास की तलाश

श्री विश्वकर्मा लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर का शोध अभियान, बगूना पहुंचकर परिवार से जुटाई महत्वपूर्ण मौखिक और दस्तावेजी जानकारी

जम्मू @ कारपेंटर्स न्यूज। विश्वकर्मा समाज के करीब 250 वर्ष पुराने डोगरी कवि लक्खू लोहार के जीवन और साहित्य से जुड़ी जानकारी जुटाने के लिए श्री विश्वकर्मा लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर, न्यू प्लॉट जम्मू ने शोध अभियान शुरू किया है। इसी अभियान के तहत लाइब्रेरी की एक टीम 9 अगस्त 2026 को सांबा जिले के बगूना गांव पहुंची, जहां लक्खू लोहार का जन्म 1770 के आसपास हुआ था। लक्खू लोहार के बारे में जानकारी मिलने के बाद लाइब्रेरी ने डोगरी भाषा के इतिहास पर शोध शुरू किया। इस सिलसिले में सबसे पहले डॉ. अनिल कुमार वर्मा, पीएचडी (डोगरी) से संपर्क किया गया। उन्होंने बताया कि डोगरी साहित्य के इतिहास पर लिखी पुस्तक डोगरी साहित्य दा इतिहास में लक्खू लोहार का उल्लेख मिलता है। संयोग से यह पुस्तक श्री विश्वकर्मा लाइब्रेरी में उपलब्ध थी। पुस्तक के अध्ययन से पता चला कि लक्खू लोहार का जन्म सांबा तहसील के बगूना गांव में वर्ष 1770 में हुआ था और उन्हें डोगरी भाषा के शुरूआती कवियों में माना जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार वह पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन कविताएं और पहेलियां बोलकर सुनाते थे।

शोध को आगे बढ़ाने के लिए लाइब्रेरी की टीम बगूना गांव पहुंची। पहली बैठक के बाद दूसरी बैठक अपर बगूना में स्वर्गीय हंसराज के घर पर हुई। बताया गया कि यह वही मकान है, जहां कभी कवि लक्खू लोहार भी रहते थे। टीम ने यहां परिवार के सदस्यों से बातचीत कर लक्खू के जीवन, परिवार और उनकी कविताओं से जुड़ी जानकारी दर्ज की तथा उपलब्ध पुराने फोटो स्कैन किए।

इस दौरान कवि लक्खू के बड़े भाई घसीटू राम की पौत्र बहू ज्योति देवी को ट्रॉफी भेंट कर सम्मानित किया गया। 70 वर्षीय ज्योति देवी ने टीम के साथ बातचीत में लक्खू लोहार से जुड़ी कई पारिवारिक स्मृतियां साझा कीं। उनके बेटे विशाल वर्मा और बहू प्रिय देवी भी इस दौरान मौजूद थे। परिवार से मिली जानकारी के अनुसार लक्खू लोहार और उनके बड़े भाई रूपा दो भाई थे। लक्खू छोटे थे। उनके पिता का नाम उपलब्ध नहीं हो सका है। लक्खू की शादी हुई थी, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी। उनकी पत्नी का नाम चंपा माना जाता है, क्योंकि उनकी कविताओं में चंपा का उल्लेख मिलता है।

ज्योति देवी ने बताया कि उनकी सास बूबा देवी उन्हें बताती थीं कि उनके चाचा ससुर लक्खू पहेलियां और कविताएं सुनाते थे, लेकिन लिख नहीं सकते थे। ज्योति देवी ने लक्खू की कुछ पहेलियां भी टीम को सुनाईं। उन्होंने यह भी बताया कि पुस्तक में लक्खू के संबंध में जिस चरण सिंह का उल्लेख मिलता है, वह उनके पड़ोसी थे। चरण सिंह शिक्षक होने के साथ-साथ स्वयं भी कवि थे और उन्होंने लक्खू के बारे में जानकारी दर्ज कराई थी।

शोध के दौरान लक्खू लोहार के परिवार की अगली पीढ़ियों के बारे में भी जानकारी जुटाई गई। लक्खू के बड़े भाई रूपा के बेटे का नाम घसीटू राम था। घसीटू राम की पत्नी का नाम बूबा देवी बताया गया। उनके परिवार की अगली पीढ़ी में रला राम, ज्ञान चंद, गिरधारी लाल और हंसराज के नाम सामने आए। परिवार के अनुसार गिरधारी लाल सेना में थे और 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान लापता हो गए थे।

घसीटू राम के दूसरे बेटे हंसराज कारीगर थे और गायन में भी रुचि रखते थे। ज्योति देवी के अनुसार हंसराज और उनके भाई गिरधारी लाल अच्छा गाते थे। उनके पास हारमोनियम, ढोलक सहित वाद्य यंत्र थे और वे रामलीला तथा अन्य धार्मिक कार्यक्रमों में भजन एवं गीत प्रस्तुत करते थे। ज्योति देवी ने बताया कि एक बार बगूना गांव में आयोजित महाराजा हरि सिंह की सभा में दोनों भाइयों ने गीत प्रस्तुत किए थे, जिसके बाद उन्हें महाराजा की ओर से सम्मानित किया गया और पुरस्कार भी दिया गया था। बाद में 1962 के युद्ध में गिरधारी लाल के लापता होने के बाद हंसराज ने गायन छोड़ दिया और अपने वाद्य यंत्र मंदिर में दान कर दिए।

परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे में पूछे जाने पर ज्योति देवी भावुक हो गईं। उन्होंने बताया कि परिवार ने लंबे समय तक आर्थिक कठिनाइयों का सामना किया। उन्होंने कहा कि उनके पति का कम उम्र में निधन हो गया था और छोटे बच्चों की परवरिश उन्होंने कठिन परिस्थितियों में की। उन्होंने बताया कि लक्खू और उनके भाई रूपा पहले एक छोटे से कच्चे आवास में रहते थे। बाद में उसी स्थान पर कच्चा मकान बनाया गया और अब वहां पक्का मकान है। टीम के अनुसार, परिवार की मौखिक जानकारी से यह संकेत मिलता है कि लक्खू की जन्मभूमि वही स्थान है जहां वर्तमान में परिवार का मकान स्थित है।

टीम को लक्खू लोहार और उनके भाई रूपा की कोई तस्वीर नहीं मिली। हालांकि, ज्योति देवी ने अपने ससुर घसीटू राम की तस्वीर दिखाई, जिसे टीम ने स्कैन कर सुरक्षित किया। शोध के दौरान लक्खू लोहार की पत्नी चंपा से जुड़ी जानकारी भी सामने आई। विश्वकर्मा लाइब्रेरी के उपाध्यक्ष बलवंत कटारिया ने डोगरी में प्रचलित पहेली सिक्ख तरखानकी बुद्धि, छे पुड़ियां ते इक सिद्धी का उल्लेख करते हुए कहा कि इसे लक्खू की पत्नी से जोड़ा जाता है। उनके अनुसार, यदि यह जानकारी प्रमाणित होती है तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि लक्खू की पत्नी भी काव्य रचना करती थीं। हालांकि इस संबंध में अभी और शोध की आवश्यकता है।

बलवंत कटारिया ने कहा कि उपलब्ध जानकारी और पुराने विवरणों के आधार पर लक्खू लोहार की तस्वीर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की मदद से तैयार करने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शोध को आगे बढ़ाकर लक्खू लोहार के जीवन और साहित्य से जुड़ी अधिक से अधिक जानकारी जुटाई जाएगी और इसे विश्वकर्मा रिपोर्टर पत्रिका के माध्यम से समाज तक पहुंचाया जाएगा। कटारिया ने कहा कि यह चिंता का विषय है कि समाज के गौरवशाली इतिहास का बड़ा हिस्सा पुस्तकों और मौखिक परंपराओं तक सीमित रह गया है। उन्होंने विश्वकर्मा समाज के लोगों से अपने इतिहास के दस्तावेजीकरण और संरक्षण का आह्वान किया।

JYOTI RESINS AND ADHESIVES LIMITED

Address: 1104-1112, Elite, Nr. Shapath Hexa, Opp. Kargil Petrol Pump, Nr. Sola Bridge, S.G. Highway, Ahmedabad-380060.

Email: inquiry@euroadhesives.com | www.euroadhesives.com | **Follow us**

राजनीतिक हिस्सेदारी के बिना विश्वकर्मा समाज का विकास अधूरा

डॉ. वीरेंद्र विश्वकर्मा बोले- सामाजिक संगठन के साथ राजनीतिक ताकत बढ़ाना भी जरूरी

मुंबई @ कारपेंटर्स न्यूज। लोकजन सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र विश्वकर्मा ने कहा कि देश की आजादी के दशकों बाद भी विश्वकर्मा समाज राजनीतिक हिस्सेदारी के मामले में अपेक्षित स्थान हासिल नहीं कर पाया है। राजनीतिक दलों ने समाज की संख्या, योगदान और क्षमता के अनुरूप उसे सम्मान व प्रतिनिधित्व नहीं दिया। उन्होंने कहा कि समाज की वास्तविक और स्थायी तरक्की के लिए राजनीतिक भागीदारी बेहद जरूरी है।

सांताक्रुज (पूर्व) के कालीना स्थित विश्वकर्मा समिति हॉल में आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 को लेकर आयोजित बैठक में पार्टी की संगठनात्मक रणनीति, जनसंपर्क अभियान और संगठन को मजबूत करने पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक को संबोधित करते हुए डॉ. विश्वकर्मा ने कहा कि जिस समाज ने राजनीति की ताकत को पहचाना और अपने अधिकारों के लिए संगठित होकर आवाज उठाई, उसने तेजी से विकास किया।

उन्होंने कहा कि देश में अनेक जातियां और सामाजिक समूह अपने अधिकारों के लिए संगठित हो रहे हैं। उनकी एकजुट आवाज का असर सरकारों पर भी दिखाई दे रहा है, लेकिन विश्वकर्मा समाज अभी भी अपेक्षित रूप से संगठित नहीं हो पाया है। समाज में मजबूत राजनीतिक नेतृत्व की कमी के कारण राजनीतिक स्तर पर उसकी आवाज प्रभावी ढंग से नहीं उठ पाई है।

डॉ. विश्वकर्मा ने कहा कि विश्वकर्मा समाज से निर्वाचित होकर विधानसभा या अन्य सदनों में पहुंचे कई जनप्रतिनिधि भी अपनी पार्टियों की सीमाओं में बंधकर रह गए। ऐसे में समाज के व्यापक हितों और राजनीतिक अधिकारों के लिए एकजुट होकर आवाज उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने समाज के लोगों से आह्वान किया कि वे राजनीति में बढ़ चढ़कर भाग लें और अपनी राजनीतिक ताकत को मजबूत करें।

उन्होंने कहा कि सत्ता विकास की कुंजी है, इसलिए समाज के लोगों को विभिन्न राजनीतिक दलों में अपनी सहभागिता बढ़ानी चाहिए और जहां संभव हो, वहां राजनीतिक प्रतिनिधित्व हासिल करने के लिए संगठित प्रयास करने चाहिए। केवल सामाजिक संगठन बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि राजनीतिक स्तर पर भी समाज की मजबूत भागीदारी सुनिश्चित करना जरूरी है। बैठक में विश्वकर्मा समिति कालीना, मुंबई के अध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा, चेयरमैन सुनील राना, महामंत्री जे. पी. शर्मा, लोकजन सोशलिस्ट पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सचिन विश्वकर्मा, नन्हेलाल विश्वकर्मा, संजय विश्वकर्मा, प्रेम विश्वकर्मा, अशोक विश्वकर्मा,रमेश विश्वकर्मा, धर्मेंद्र विश्वकर्मा, गणेश विश्वकर्मा सहित अन्य पदाधिकारियों व समाज के प्रमुख लोगों ने भी अपने विचार रखे।

लखनऊ के विराट विश्वकर्मा मंदिर में सुनील राणा का भव्य अभिनंदन

लखनऊ @कारपेंटर्स न्यूज। विश्वकर्मा समिति मुंबई के चेयरमैन सुनील राणा का लखनऊ स्थित विराट विश्वकर्मा मंदिर में भव्य स्वागत व अभिनंदन किया गया। मंदिर परिसर में आयोजित समारोह में समाज के पदाधिकारियों और गणमान्य लोगों ने राणा का पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर विराट विश्वकर्मा मंदिर के अध्यक्ष अखिलेश मोहन व महामंत्री अरुण विश्वकर्मा सहित अनेक समाजसेवी उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा समिति मुंबई के कार्यकारिणी सदस्य संजय विश्वकर्मा भी कार्यक्रम में मौजूद थे। समारोह के दौरान लखनऊ के मकबूल गंज स्थित श्री विश्वकर्मा मंदिर व धर्मशाला के निर्माण कार्य को लेकर भी चर्चा हुई। समाज की धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं को मजबूत करने और आपसी सहयोग बढ़ाने पर विचार विमर्श किया गया। सुनील राणा ने कहा कि समाज की प्रगति के लिए सामाजिक एकता सबसे जरूरी है।

समाज की अपनी मजबूत पहचान बनानी चाहिए और इसके लिए सभी लोगों को आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर एकजुट होकर प्रयास करना होगा। उन्होंने कहा कि सामाजिक संस्थाएं समाज को संगठित करने और नई पीढ़ी को अपनी परंपरा व संस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने राणा के लखनऊ आगमन पर उनका स्वागत करते हुए सामाजिक एकता और संगठन को मजबूत करने की दिशा में मिलकर काम करने का संकल्प व्यक्त किया।

इजराइल रवाना हुए राज्य के 60 निर्माण श्रमिक

मुंबई @ कारपेंटर्स न्यूज। महाराष्ट्र के कुशल निर्माण श्रमिकों के लिए विदेश में रोजगार के अवसर खुल रहे हैं। इसी क्रम में राज्य के 103 चयनित श्रमिकों में से 60 श्रमिकों का पहला दल 3 सितंबर को इजराइल के लिए रवाना हुआ। यह पहल राज्य सरकार और भारत सरकार के सहयोग से शुरू की गई है, जिससे सुरक्षित और बेहतर आय वाले रोजगार उपलब्ध हो सकें।

मुंबई के यशवंतराव चव्हाण केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में कौशल विकास मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने इजराइल जाने वाले युवाओं से संवाद किया। उन्होंने कहा कि मेहनत, अनुशासन और ईमानदारी से काम कर श्रमिक महाराष्ट्र और देश का नाम रोशन करें। सरकार ने औद्योगिक प्रशिक्षण के साथ इजराइल में काम करने के लिए विशेष प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराया है। इस योजना के तहत प्लास्टर, टाइल लगाने, भवन ढांचा निर्माण और लोहे के कार्य से जुड़े श्रमिकों का चयन किया गया है।

DUROPLY®

जो रोज़ दूसरों के सपने बनाते हैं, अब उनके सपनों की बारी है

हर प्रोजेक्ट के पीछे सिर्फ़ मटेरियल नहीं, मेहनत, हुनर और भरोसा होता है।

एक कॉन्ट्रैक्टर की प्लानिंग से लेकर एक कारपेंटर की बारीकी, एक फ़र्नीचर डीलर के भरोसे से लेकर एक इंटीरियर डिज़ाइनर की सोच तक — हर किसी का काम किसी न किसी के सपने को आकार देता है। कोई घर बनाता है, कोई ऑफिस को एक नई पहचान देता है, तो कोई अपनी कारीगरी से एक ख़ास जगह को और ख़ूबसूरत बना देता है।

इन लोगों के लिए काम सिर्फ़ रोज़ का काम नहीं है, यह इनका हुनर है, इनकी पहचान और इनकी मेहनत की कमाई है।

अब इसी मेहनत को मिलेगा एक बड़ा रिवॉर्ड।

ड्यूरोप्लाई इंडस्ट्रीज़ लेकर आया है DURO SUPERSTARS 3.0 — "उड़ान सितारों की", एक अपग्रेडेड लॉयल्टी प्रोग्राम, ख़ास तौर पर कॉन्ट्रैक्टर्स, कारपेंटर्स, के लिए।

ड्यूरोप्लाई लॉयल्टी प्रोग्राम का उद्देश्य है आपकी रोज़ की ड्यूरोप्लाई प्रोडक्ट्स की खरीदारी को आपके लिए और फ़ायदेमंद बनाना। DURO SUPERSTARS 3.0 में खरीददार रजिस्टर करने पर 3X तक पॉइंट मिलते हैं यानी जितनी ज़्यादा खरीदारी, उतने ज़्यादा पॉइंट्स और ज़्यादा कमाई का अवसर।

हर ख़रीद के साथ बढ़ता जाए रिवॉर्ड

DURO SUPERSTARS 3.0 में पॉइंट्स कमाना और उन्हें रिडीम करना बेहद आसान है।

ड्यूरोप्लाई प्रोडक्ट्स ख़रीदिए → ऐप पर क्लेम रजिस्टर कीजिए → पॉइंट्स कमाइए → जब चाहें रिडीम कीजिए।

ड्यूरोप्लाई प्रोडक्ट्स की ख़रीदारी करने के बाद PROGRAM मेंबर्स को DURO SUPERSTARS ऐप पर उसका क्लेम सबमिट करना होगा। क्लेम अप्रूव होते ही पॉइंट्स उनके अकाउंट में जुड़ जाएंगे।

पॉइंट वैल्यू में इंडस्ट्री लीडर — 1 पॉइंट = ₹5

यानी जितनी ज़्यादा खरीददारी उतनी ज़्यादा कमाई और उतना ही बड़ा गिफ्ट घर ले जाये।

PROGRAM मेंबर्स अपने पॉइंट्स को 24/7 GIFT या UPI / बैंक ट्रांसफ़र के ज़रिए सीधे अपने बैंक अकाउंट में रिडीम कर सकते हैं।

DURO SUPERSTAR 3.0— आपके जमा किए हुए पॉइंट्स कभी एक्सपायर नहीं होते हैं | यानी आज कमाए गए पॉइंट्स को आप अपनी ज़रूरत के हिसाब से कभी भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

एक सामान्य साइट प्रोजेक्ट में ड्यूरोप्लाई प्रोडक्ट्स की खरीदारी पर कॉन्ट्रैक्टर कमा सकता है 10,000 तक पॉइंट्स — यानी सिर्फ़ एक प्रोजेक्ट से ₹50,000 तक का शानदार रिवॉर्ड!

जितना बड़ा क्लब, उतनी बड़ी कमाई!

आपके पॉइंट्स, आपका क्लब, आपके रिवॉर्ड्स - सब कुछ एक ही जगह पर।

DURO SUPERSTARS 3.0 में सिर्फ़ पॉइंट्स जमा करना ही उद्देश्य नहीं है। आपके पॉइंट्स के साथ आपका क्लब लेवल भी आगे बढ़ता है।

PROGRAM मेंबर्स BRONZE, SILVER, GOLD और TITANIUM — इन चार क्लब लेवल्स तक बढ़ाएं अपना क्लब और हर पड़ाव पर पाएं बड़े रिवॉर्ड्स और शानदार फायदे!

जितना ऊंचा लेवल, उतने ज्यादा रिवॉर्ड्स और उतने ही खास फायदे।

हर खरीदारी पर SILVER CLUB में 10%, GOLD CLUB में 15% और TITANIUM CLUB में 20% बोनस मिलता है।

यानी आपकी लगातार की गई ख़रीदारी आपको सिर्फ़ ज़्यादा पॉइंट्स ही नहीं दिलाती, बल्कि आपको अगले क्लब लेवल तक पहुँचने का मौक़ा भी देती है।

बढ़ते क्लब लेवल्स के साथ मिलने वाले फ़ायदे भी और ख़ास हो जाते हैं। इनमें मंथली बोनस, SPIN THE WHEEL, फ़्री DURO DIGITAL CONNECT बिज़नेस प्रोफ़ाइल और पर्सनलाइज़्ड बिज़नेस कार्ड्स शामिल हैं।

इस तरह DURO SUPERSTARS 3.0 आपके काम को सिर्फ़ रिवॉर्ड नहीं करता, बल्कि आपके बिज़नेस को आगे बढ़ाने में भी मदद करता है।

रिवॉर्ड के साथ EXCLUSIVE CLUB BENEFITS

मेहनत करने वाले लोगों के लिए सिर्फ़ आज की कमाई ज़रूरी नहीं होती। अपने परिवार की सुरक्षा और भविष्य की चिंता भी उतनी ही अहम होती है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए DURO SUPERSTARS 3.0 में रिवॉर्ड्स के साथ दूसरी सुविधाओं का भी ध्यान रखा गया है।

TITANIUM मेंबर्स के लिए रिवॉर्ड्स का सिलसिला यहीं ख़त्म नहीं होता। उन्हें MEGA SPIN LUCKY DRAW में मोटरसाइकिल, फ्रिज और कार जैसे बड़े प्राइज़ जीतने का मौक़ा भी मिलता है।

क्योंकि आपकी मेहनत सिर्फ़ काम नहीं, आपकी पहचान है।

हर दिन आप किसी के सपनों को आकार देते हैं।
किसी के घर को खूबसूरत बनाते हैं।
किसी ऑफिस को नई पहचान देते हैं।
किसी फर्नीचर में अपने हुनर की छाप छोड़ते हैं।
और किसी खास जगह को अपनी सोच और कारीगरी से खास बनाते हैं।

आपका हुनर लोगों की ज़िंदगी का हिस्सा बनता है। अब आपकी मेहनत का हर फ़ायदा भी आपके साथ चले। क्योंकि जो आप दूसरों के सपनों के लिए करते हैं, उसका इनाम आपके अपने सपनों के लिए भी होना चाहिए।

आज ही DURO SUPERSTARS 3.0 से जुड़ें और 3 गुना तक रिवॉर्ड्स का आनंद लें।

DURO SUPERSTARS 3.0
उड़ान सितारों की

आपकी मेहनत। आपका रिवॉर्ड। ड्यूरोप्लाई के साथ आपकी उड़ान।

DURO SUPERSTAR ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें
Customer Care: 0120-668877